१ ओअंकार (ੴ) सति गुर प्रसादि

यहूदी मत व गुरमत

मूल रूप में

सिक्ख मिशनरी कॉलेज (रजि.)
लुधियाना द्वारा प्रकाशित पुस्तक

क्रांतिकारी जगत् गुरू नानक देव चैरिटेबल ट्रस्ट, चण्डीगढ़

लॉन्च करता : जसबीर सिंघ
Mob. : 099881-60484, 62390-45985

Type Setting : Radheshyam Choudhary
Mob. : 098149- 66882

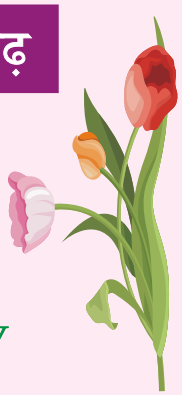

Download Free

यहूदी मत व गुरमत

सरदार कृपाल सिंघ 'चंदन'

अनुवाद : स. कुलबीर सिंघ, नई दिल्ली

यहूदी मत भी कतेबी मतों में से एक नामी मत है। इस मत के संस्थापक हज़रत मूसा जी को माना जाता है। तौरेत इस मत की धार्मिक पुस्तक का नाम है।

हज़रत मूसा, हज़रत ईसा जी से लगभग पौने सोलह सदियों पूर्व मिश्र में पैदा हुए थे। यह हज़रत इसमाईल जी का वंश में से थे। इन कि पिता जी का नाम अमरान था। जब आप पैदा हुए तो उस समय करऔन बादशाह मिश्र पर राज्य करता था। फरऔन इज़राइल वंश के बालकों को पैदा होते ही मरवा देता था इसलिए इन की माता ने इन को तीन महीने छिप - छिपा कर पालने के पश्चात, एक संदूक में बंद करके नील नदी में बहा दिया था। सखियों के संग नील नदी के किनारे सैर करने आई फरऊन की शाहज़ादी की नज़र अचानक इस बहते जाते संदूक पर पड़ गई। उसने जब संदूक खोल कर इस खूबसूरत लड़के को देखा तो उसे घर ले गई और उसे पालने लगी। इबरानी भाषा में मासाह के अर्थ खिंचा है। इसलिए पानी में से खींच कर लाने के कारण ही इस का नाम मूसा रखा गया।

चालीस वर्ष की आयु में हज़रत मूसा अरब की ओर आए तो घर ग्रहस्थी बने। इन का विवाह सफूर नाम की एक लड़की के संग हुआ जिस में से आप के घर में एक बेटा जन्मा जिस का नाम गोरसो रखा गया।

बताया जाता है कि हज़रत मूसा जी कोहतूर पर्वत पर जा कर ईश्वर के संग गुपचुप बातें करते थे। इस पर्वत पर आप को ज्ञान हुआ था। बाईबल व कुरान के अनुसार आप पर ईश्वर के आदेश नाज़िल होते थे। यह भी लिखा है कि जो हज़रत के एक बार लगातार 40 दिन रोज़े रखे थे और ईश्वर के साथ, इस दौरान बेशुमार बातें भी की थीं। कहते हैं कि ईश्वर ने प्रसन्न होकर आपको अपनी उंगलियों से लिखी स्लेटें व एक करामाती डंडा भी प्रदान किया था।

बाईबल में खुदा की ओर से इन को नीचे लिखे निर्देश प्राप्त हुए :

(1) केवल मुझे ही ईश्वर जानो। मेरे तुल्य किसी और को न समझो।

(2) मूर्ति पूजा न करना।

(3) अकारण खुदा का नाम न लेना।

(4) शनि का दिन पवित्र जान कर कोई काम नहीं करना क्योंकि इस दिन दुनियां की रचना करके मैंने आराम किया था।

(5) माता पिता का पूर्ण सम्मान करना

(6) चोरी यारी नहीं करनी।

(7) किसी को गुलाम नहीं बनाना।

(8) खून नहीं करना।

(9) किसी पड़ोसी की झूठी गवाही नहीं देनी।

(10) पड़ोसी की किसी चीज का लालच नहीं करना।

यहूदियों को मौजजे दिखलाने के कारण हज़रत मूसा नबी माने गए। तौरेत इन की इलहामी पुस्तक है जो खुदा द्वारा आप पर प्रकट हुई। हारून आप का पहला चेला था।

यहूदियों का पहला बादशाह साल माना जाता है। साल की सल्तनत मूसा के 120 वर्ष की आयु भोग कर उस के मर जाने के पश्चात कायम हुई। साल के पश्चात दूसरा बादशाह हज़रत दाऊद माना जाता है। हज़रत दाऊद ने पैगंबरी का दावा किया। बाईबल के पुराने अहिदनामे हज़रत दाऊद के ही लिखे मने जाते हैं। इसके पश्चात सुलेमान हुकमरान हुआ। यह भी अपने आप को पैगंबर कहलवाया।

यहूदी व्यापार के मैदान में सब से आगे गिने जाते हैं। आम तौर पर ये लोग हजरत इब्राहीम याकूब और अज़हाक को अपना मुखी मानते हैं। सुन्नत करते हैं। सिर पर बालों का एक गुच्छा रखते हैं। इन के सिद्धांत इस प्रकार हैं :

(क) खुदा एक है उसका नाम यहोवा है।

(ख) नबी इज़राइल के नबी हज़रत मूसा हैं। उन्होंने ईश्वर के संग बातें की थीं। इज़राईली कौम ईश्वर द्वारा चुनी हुई और सर्वश्रेष्ठ कौम है।

(ग) हज़रत याकूब जो कौम के अग्रणी हैं, को ईश्वर ने कई वर दिए थे जिनसे यह स्पष्ट था कि वह इज़राइलियों की सदा ही रक्षा करेगा और इन्हें बढ़ते फूलते रखेगा।

(घ) जानवरों की कुर्बानी देना एक आध्यात्मिक कर्म है। यहूदी ग्रंथों में लिखा है हारून ने कुर्बानी देने के लिए कुर्बान-गाह बनाई। उस ने यह कह कर डोंडी पिटवा दी कि कल खुदा की ईद है। यहूदी सुबह उठे और रबानियां चढ़ाएं। उन्होंने सेखतनी कुर्बानियां चढ़ाई। फिर सलामती रबानियां दीं और खाने पीने के लिए बैठ गए।

(ड.) ऊंठ, सेहा और सूअर का मास अपवित्र माना गया है, इसलिए हराम है। चील, गिद्ध, कौवा, शतुरमुर्ग, बगुला, उल्लू, चकीराह, चिमगादड़ आदि का मास खाना विवर्जित है। अन्य हर तरह का मास खाना हलाल है।

(च) चालीसे रोज़े रखने जरूरी हैं।

(छ) सुन्नत करवाना जरूरी है।

(ज) हर मसई के लिए सात नमाज़ पढ़ना जरूरी हैं।

नोट : (1) हज़रत मूख व हज़रत ईसा के बीच हजार साल के समय के बीच जो आदेश नाज़िल हुए उन के संग्रह का नाम बूर है।

(2) यहूदी लोग हज़रत ईसा व मुहम्मद साहिब को अपना पैगंबर नहीं मानते पर मुसलमान व इसाई हज़रत मूसा को नबी मानते हैं।

(झ) **दान :** अपने खेतों में हुए अनाज का दसवां हिस्सा वफादारी से खुदा के नाम पर एक और रख दें।

(ञ) यदि कभी किसी गुलाम को खरीदो तो उसको छ: साल रख कर सातवें साल आज़ाद कर दो।

(ट) किसी कुंवारी लड़की पर झूठा दोष लगने वाले को एक सौ रुपए दंड लगा कर लड़की के पिता को मुआवज़ा दिलवाओ पर यदि लड़की दोषी निकले तो उसको संगशार (पत्थर मार – मार कर मारना) कर दो।

(ठ) यहूदियों का एक बादशाह कायम करो।

गुरमति : गुरमत का सीधा संबंध यहूदी मत से चाहे कोई नहीं पर फिर भी कहीं – कहीं स्वाभाविक मेल प्रतीत होता है।

जैसे यहूदी ईश्वर को वाहिदुलशरीक समझता है जो हिदायत नंबर 1 केवल मुझे ईश्वर जानना मेरे समतुल्य किसी और का न समझना।'' गुरमत भी अकाल पुरख को लाशरीक व एक ही मानती है। पर गुरमत के अनुसार ईश्वर अरूप और अनाम है।

गुणु एहो होरु नाही कोइ । ना को होआ न को होइ ।। 3 ।। (आसा महला 1)

इक बिन दूसर सो ना चिनार ।। (देवगंधारी पा 10)

यथा

एकंकारु अवरु नही दुजा नानक ऐकु समाई ।। (रामकली महला 1 दखनी ओअंकार)

यथा

तिसहि सरीकु नाही रे कोई ।। (किस ही बुतै जबाबु न होई ।। (मारू सोलहे महला 5)

यथा

तिसका सरीकु को नाहीं ना को कंटकु वैराई ।। (वार वडहंस महला 3)

मूर्ति पूजा : गुरमत में भी मूर्ति पूजा विवर्जित है।

(3) खुदा का नाम लेना कभी भी व्यर्थ नहीं जाता । सिख ने आठों पहर हरी के गुणों का गायन करना है और श्वास – श्वास सुमिरन करना है, बल्कि रोम रोम प्रभु को याद करना है।

सिमरि सिमरि नाम बारं बार ।।

नानक जीअ का इहै अधार ।। 2।।24।। (गउड़ी सुखमनी महला 5)

यथा

उठंदिआं बहंदिआ सवंदिआं सुख सोइ ।।

नानक नामि सालाहिऐ मनु तनु सीतलु होइ ।। (सलोक महला 5, वार गउड़ी महला 5)

जो प्रानी निसदिन भजै रूप राम तिह जानु ।।

हरि जन हरि अंतरु नहीं नानक साची मान ।। 29।। (सलोक सिधगोसट महला 1)

यथा

गुरमुख रोम रोम हरि धिआवै ।।

गुरमुख सगली गणत मिटावै ।। (सलोक महला 1)

(4) शनिवार की पवित्रता : गुरमत के अनुसार किसी एक दिन, बार, महीने या तिथि को पवित्र नहीं माना जाता। सारे दिन वार, तिथियां एक समान हैं। जरूरत है अकाल पुरख, उस परमपिता परमात्मा की कृपा की।

माह दिवस मूरत भले जिन कउ नदरि करे ।।

नानक मंगै दरसु दानु किरपा करहु हरे ।। 14 ।। 1 ।। (बारह माहा माझ महला 5)

यथा

बेदस माह रुती थिति वार भले ।।

घड़ी मूरत पल साचे आए सहिज मिले ।। 17 ।। 1 ।। (बारहमाह तुखारी महला 1)

(5) चोरी – यारी न करना

चोरी – यारी न करना सदाचार का लक्षण है। गुरमत में इनको केवल विवर्जित ही नहीं माना गया बल्कि भारी गुनाह समझा गया है। यहां तक कि परस्त्री गमन का व्यभिचार एक सिख को पतित कर देता है और सिखी से खारिज कर देता है। इसलिए यहां तक हिदायत है

– पर त्रिआ रूप न पेखो नेत्र ।। (गउड़ी सुखमनी महला 5)

यथा

– जैसा संगु बिसीअरु सिउ है रे तैसे ही इह परग्रिहु ।। 2 ।।

जहां पर पराए धन की बात है उस की ओर आंख उठा कर देखना भी विवर्जित है।

– अखी सूतकु वेखणा परत्रिय परधन रूप ।। 3 ।। 18 ।। (वार आसा महला 1)

यथा

– देख पराइआं चंगीआं मावां भैणां धीआं जाणै ।।

लॉन्च करता : जसबीर सिंघ
Mob. : 099881-60484, 62390-45985

Type Setting : Radheshyam Choudhary
Mob. : 098149- 66882